श्री राम चंद्र मिशन

ECHOES
इंडिया
समाचार पत्र

पूज्य बाबूजी महाराज का ११६वाँ जन्मोत्सव

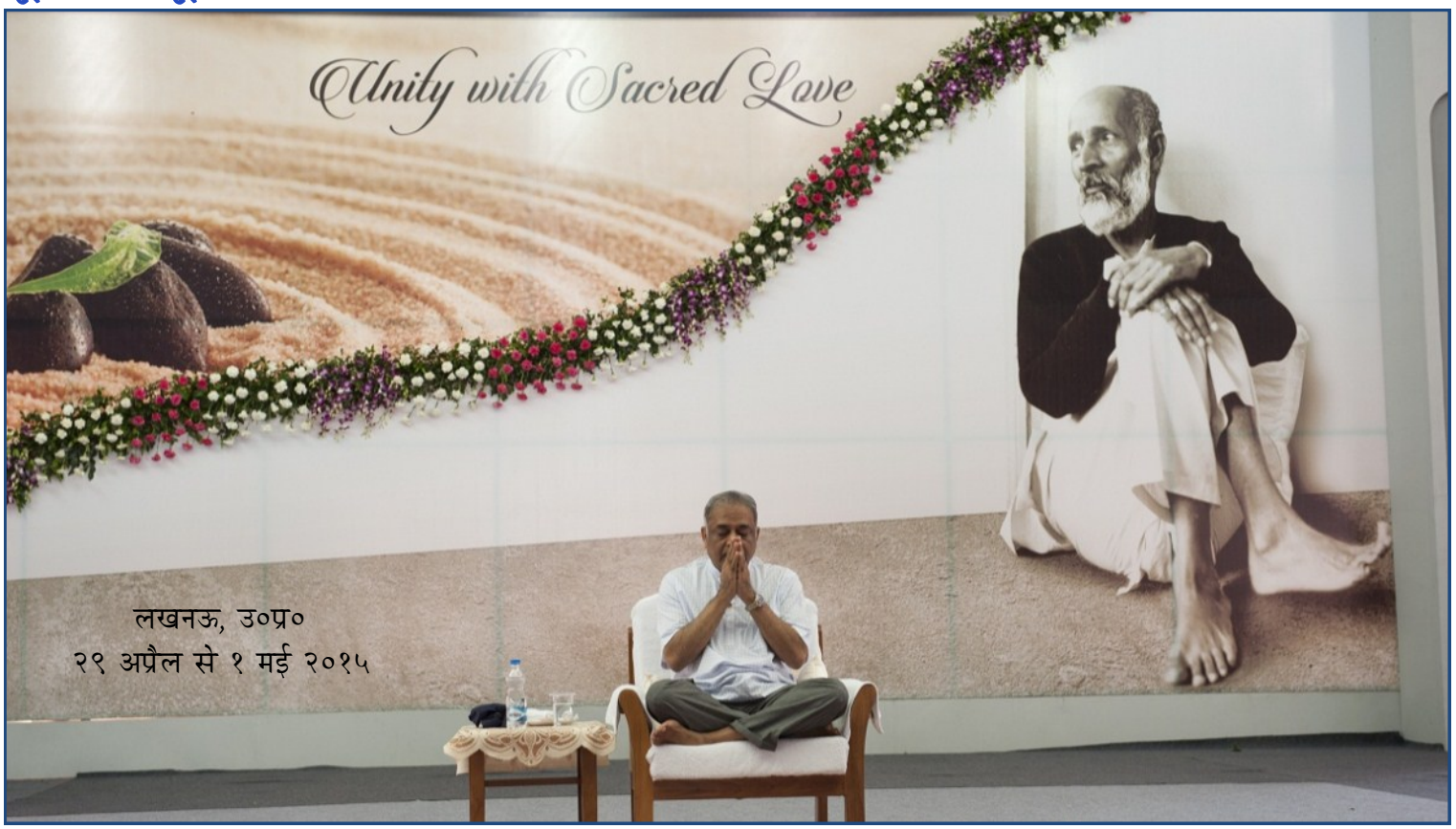

प्रारम्भिक घोषणा

१२ जनवरी २०१५ को आदरणीय कमलेश भाई द्वारा विश्वभर के सभी अभ्यासियों के लिये सहज सन्देश के माध्यम से घोषणा की गयी कि पूज्य बाबूजी महाराज का जन्मोत्सव लखनऊ, उ०प्र० में २९ अप्रैल से १ मई २०१५ तक मनाया जायेगा, जिसमें उन्होंने सभी अभ्यासियों से बड़ी संख्या में एकत्र होने का आग्रह किया ।

उत्सव की तैयारी

जैसे ही इस उत्सव के लखनऊ में आयोजित किये जाने की घोषणा की गयी, उत्सव की तैयारी का कार्य प्रारम्भ हो गया । लखनऊ में पिछला भण्डारा वर्ष २०१० में पूज्य चारीजी के जन्मोत्सव के रूप में आयोजित किया गया था । पाँच वर्ष के लम्बे अन्तराल के बाद फिर से लखनऊ में भण्डारा आयोजित किये जाने को लेकर सभी अभ्यासियों के मन में एक उत्सुकतापूर्ण प्रतीक्षा थी ।

उत्सव समिति ने उत्सव स्थल पर की जाने वाली व्यवस्थाओं तथा पंजीकरण आरम्भ होने के विषय में परिपत्र भेजने शुरू किये । साथ ही उन्होंने उत्सव आयोजन के सभी पक्षों की देखभाल करने हेतु स्वयंसेवकों के दल भी बनाने प्रारम्भ किये, जिससे सभी सहभागियों को आवश्यक सुविधायें दी जा सकें और वे उत्सव के विशेष वातावरण में आसानी से डूब सकें ।

स्वयंसेवकों के एक छोटे किन्तु समर्पित दल ने उत्सव स्थल पर अनथक कार्य किया । गुरुदेव कमलेश भाई ने १५ अप्रैल को लखनऊ आश्रम का भ्रमण किया तथा उन्होंने उत्सव की तैयारियों का निरीक्षण किया । वे रसोई–घर, सामान्य आवास व्यवस्था, सुख–निवास, कैन्टीन, बुक स्टॉल, चिकित्सा–केन्द्र, बाल–केन्द्र तथा अन्य दूसरी इकाइयों के निरीक्षण सहित उत्सव–स्थल के चारों ओर घूमे । वे उत्सव की तैयारियों को देखकर प्रसन्न थे तथा इसमें और सुधार के लिये उन्होंने सुझाव दिये ।

पूज्य गुरुदेव का भण्डारा स्थल पर आगमन

कमलेश भाई उत्सव के लिये २७ अप्रैल की अपराह्न हैदराबाद से लखनऊ पहुँचे । अभ्यासियों ने प्रेम तथा उत्साह के साथ इस बहुप्रतीक्षित उत्सव में उनका स्वागत किया ।

उन्होंने २७ अप्रैल की सायं सत्संग कराया तथा २८ अप्रैल को दो सत्संग कराये । २८ अप्रैल की प्रातः पूज्य गुरुदेव को तीन घण्टे से अधिक समय तक कैन्टीन के टोकन बाँटते देख कर सभी अभ्यासी

हर्ष सहित अचम्भित थे, और हर कोई उनसे टोकन प्राप्त करने के लिये पंक्ति में खड़ा हो गया । उस दिन उन्होंने पाँच विवाह भी सम्पन्न कराये ।

उत्सव स्थल

इतने विशाल समारोह के लिये, व्यवस्थायें भी बहुत बड़े क्षेत्र में फैली हुईं थीं । एक ओर पंजीकरण का स्थान, बिस्तर एवं तम्बुओं के साथ साथ अभ्यासियों के लिये मुख्य रसोई घर तथा भोजन करने के लिये स्थान था । ध्यान कक्ष की ओर जाने वाले मार्ग में पीने का पानी, बुक स्टॉल, दान पटल, बैंकिंग सुविधा तथा विविध प्रकार के रुचिकर अल्पाहार से युक्त एक बड़ी कैन्टीन की व्यवस्था की गयी थी । बाल केन्द्र ध्यान कक्ष के मार्ग में कैन्टीन के बाद स्थित था, ताकि अभ्यासी अपने बच्चों को वहाँ आसानी से छोड़ सकें । अभ्यासियों के लिये तम्बुओं के निकट स्थल से ध्यान कक्ष के प्रवेश द्वार तक जाने के लिये परिवहन व्यवस्था भी उपलब्ध करायी गयी थी । ध्यान कक्ष के एक ओर छोटी कैन्टीन सहित सुख निवास तथा दूसरी ओर गुरुदेव की कॉटेज स्थित थी ।

बुक स्टॉल बहुत विस्तृत आकार में था तथा इसके एक बड़े भाग में बिक्री के लिये छायाचित्र (फोटोग्राफ़) प्रदर्शित किये गये थे । इस बार यह शौपिंग सेंटर (मॉल) जैसा अनूठा अनुभव था । कोई भी एक स्टॉल से दूसरे स्टॉल की ओर घूमते हुए अपने रुचि के प्रकाशन, डी०वी०डी०, एम०पी०३ आदि देख व चुन सकता था । पहली बार केन्द्रीय बीजक व्यवस्था स्थापित की गयी थी तथा दस में से किसी भी एक पटल पर जाकर बिल का भुगतान नकद अथवा क्रेडिट कार्ड के द्वारा किया जा सकता था । यद्यपि इंटरनेट कनेक्टिविटी में कमी के कारण क्रेडिट कार्ड भुगतान में कुछ समस्यायें आयीं, फिर भी निश्चित रूप से इस अनूठे तरीके ने सभी के खरीदारी के अनुभव को समृद्ध किया ।

ध्यान कक्ष

सबसे प्रभावशाली १,५४,००० वर्ग फ़ुट क्षेत्र में फ़ैला भव्य सत्संग भवन था । यह विशेष जर्मन तकनीक द्वारा निर्मित किया गया था, जिसमें १३० फ़ीट दूरी तक किसी सहायक स्तम्भ की आवश्यकता नहीं थी और यह सभी अभ्यासियों को सम्पूर्ण मंच का अबाधित दृश्य उपलब्ध करा रहा था । एक मंच बना हुआ था तथा साथ में कई एल०ई०डी० स्क्रीन लगाये गये थे, ताकि सभी अभ्यासी आसानी से कार्यवाही को देख सकें । ध्यान कक्ष में कई भाग किये गये थे; उदाहरणार्थ जो ज़मीन पर बैठना चाहते थे उनके लिये अलग भाग, जो अपनी कुर्सी साथ लेकर चल रहे थे उन के लिये अलग भाग, तथा कुर्सियाँ लगा हुआ एक बड़ा भाग उन अभ्यासियों के लिये जिन्हें कुर्सियों की आवश्यकता थी । लखनऊ में इस मौसम की गर्मी को देखते हुए छत को विशेष पी०वी०सी० चादरों से ढका गया था, जिससे न केवल ध्यान कक्ष के अन्दर का तापमान कम हो बल्कि वह जलरोधक भी हो । ध्यानकक्ष में बहुत सारे छत के पंखे तथा किनारों पर फुहारे वाले पंखे लगाये गये थे, ताकि ध्यान के लिये सुखद वातावरण तैयार किया जा सके ।

स्वयंसेवक

किसी भी उत्सव का आयोजन, समर्पित स्वयंसेवकों के दल के बिना संभव नहीं है । विभिन्न गतिविधियों जैसे परिवहन, रख रखाव (हाउस कीपिंग), ध्यान–कक्ष, सुरक्षा, चिकित्सा इत्यादि में प्रत्येक वय वर्ग के स्वयंसेवक सम्मिलित किये गये थे ।

इस उत्सव में स्वयंसेवकों द्वारा बाँह में पहनी जाने वाली पट्टी में रोचक परिवर्तन किया गया था । सुरक्षा विभाग के स्वयंसेवकों की बाँह पट्टी पर 'विनम्रता' शब्द अंकित किया गया था । इसी प्रकार

श्री राम चंद्र मिशन एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

रख–रखाव विभाग के स्वयंसेवकों की बाँह पट्टी पर 'सेवा', चिकित्सा विभाग के स्वयंसेवकों की बाँह पट्टी पर 'प्रेम' तथा ध्यान कक्ष के स्वयंसेवकों की बाँह पट्टी पर 'मौन' शब्द अंकित किये गये थे ।

पंजीकरण

इस भण्डारे में कुल मिलाकर २०,००० व्यक्ति उपस्थित हुए, जिनमें लगभग २८०० बच्चे सम्मिलित हैं ।

समारोह

उत्सव का शुभारम्भ २९ अप्रैल को प्रातः ६:३० बजे के सत्संग के साथ हुआ । मंच को एक अति सुन्दर पृष्ठभूमि के साथ अलंकृत किया गया था, जिसमें एक तरफ़ प्रिय बाबूजी महाराज का चित्र अंकित था तथा 'पवित्र प्रेम के साथ एकात्मकता' शब्द लिखे गये थे।

सत्संग के पश्चात् अनेक बच्चों को कई नये प्रकाशनों, डी०वी०डी० तथा ऑडियो बुक्स का विमोचन करने के लिये बुलाया गया ।

गुरुदेव की प्रथम वार्ता

अभ्यासियों को अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हुआ जब कमलेश भाई ने प्रार्थना, निर्मलीकरण तथा हालत को बनाये रखने के महत्व; इन तीन बिन्दुओं पर वार्ता दी ।

- सहजमार्ग की प्रार्थना में हम कहते हैं, 'हम अपनी इच्छाओं के गुलाम हैं' और 'तू ही एकमात्र ईश्वर व शक्ति है जो हमें उस लक्ष्य तक ले चल सकता है' । इस प्रकार प्रार्थना में बहुवचन 'हम' तथा 'हमें' न कि एकवचन 'मैं' तथा 'मुझे' का प्रयोग होता है; जब कि हम मानसिक रूप से प्रार्थना को केवल अपने तक सीमित रखने का प्रयास करते हैं । प्रार्थना केवल मुझ तक सीमित नहीं है, इस में हम सब सम्मिलित हैं ।
- निर्मलीकरण की प्रक्रिया में जब हम इस विचार के साथ बैठते हैं कि जटिलतायें बाहर निकल रहीं हैं, तो जो शेष रह जाता है वह है सादगी । इसी प्रकार जब हम इस विचार के साथ बैठते हैं कि अशुद्धियाँ बाहर निकल रहीं हैं, तो जो शेष रह जाता है वह है शुद्धता ।
- हालत के सम्बन्ध में – जिस प्रकार माता शिशु को भौतिक संसार में जन्म देने से पूर्व नौ माह तक अपने गर्भ में रखती है; उसी प्रकार (अभ्यासी के लिये) एक सद्गुरु हमारे आध्यात्मिक अस्तित्व को दिव्य लोक, जिसमें अन्ततः हमें एकरूप होना है, में जन्म देने से पूर्व सात माह तक अपने मनस में रखते हैं । कमलेश भाई ने अभ्यासियों से आग्रह किया कि उन्हें अपने अन्तर में स्थित गुरुदेव के साथ एक स्थायी सम्पर्क बना कर रखना चाहिये । उन्होंने कहा कि इस के लिये अनुशासन परम आवश्यक है ।

श्री राम चंद्र मिशन एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

११:०० बजे के सत्संग के बाद 'राम चन्द्र की सम्पूर्ण कृतियाँ – भाग ५' पुस्तक के विशेष संस्करण के विमोचन की घोषणा की गयी। इस संस्करण में बाबूजी महाराज के अप्रकाशित लेख तथा १९४० से १९७० के दशकों के मध्य उनके द्वारा लिखे गये पत्रों के तथा अनौपचारिक चर्चाओं में कही गयी बातों के उद्धरण सम्मिलित किये गये हैं ।

शाम ५:३० बजे के सायंकालीन सत्संग के पश्चात् गुरुदेव प्रेम पर, अभ्यासियों द्वारा अभ्यास छोड़ने के कारणों पर तथा परिवर्तन को आमन्त्रण देने व स्वागत करने की आवश्यकता पर पुन: बोले ।

- उन्होंने कहा कि प्रेम इतना पवित्र होता है कि इसके बारे में बोलना भी निषिद्ध है । प्रेम में केवल प्रेमी, स्वयं प्रेम और प्रियतम होते हैं ।
- उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हम अभ्यासी संस्कारों के अतिरिक्त अहंकार का बहुत बड़ा बोझ भी ढोते हैं, जो कि हमें प्रगति करने एवं परिवर्तित होने में बाधक होता है ।
- परिवर्तन के बारे में चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि प्रगति के लिये हमें परिवर्तित होने और परिवर्तन को आमन्त्रित करने की आवश्यकता है । हम परिवर्तन के प्रति इतने प्रतिरोधी हैं कि जब भी गुरुदेव हमें आगे ले जाना चाहते हैं; हम उसी भाँति रहना चाहते हैं, जैसे कि हम हैं । गुरुदेव परिवर्तन के लिये केवल उस स्तर तक ही पहल करेंगे, जिस स्तर तक हमारी स्वीकार्यता है । परिवर्तन की स्वीकार्यता का यह मार्ग साधारण लोगों के लिये नहीं, अपितु असाधारण लोगों के लिये है, क्योंकि परिवर्तन स्वीकार करना आसान नहीं है ।

३० अप्रैल, २०१५

एक सुन्दर पृष्ठभूमि मंच को अलंकृत कर रही थी जिसमें 'पवित्र प्रेम के साथ संगति' शब्दों सहित एक तरफ़ प्रिय बाबूजी का चित्र और दूसरी तरफ़ पक्षियों का झुण्ड था ।

प्रात: ६:३० बजे के सत्संग के पश्चात् भाई गुरप्रीत ने दो भक्ति गीत गाये, जिसने सभी अभ्यासियों को मन्त्रमुग्ध कर दिया । ध्यान कक्ष में 'लाइफ़ ऑफ़ बाबूजी' वीडियो का भाग प्रथम एवं द्वितीय दिखाया गया । प्रात: ११:०० बजे के सत्संग के पश्चात् भाई पी०आर०कृष्णा को उनके विचार व्यक्त करने तथा 'व्हिस्पर्स फ्रॉम दी ब्राइटर वर्ल्ड' के विशेष प्रकाशन का विमोचन करने हेतु आमंत्रित किया गया, जिसमें ऐसे संदेश सम्मिलित किये गये थे जो कि विशेषत: प्रिय चारीजी को लालाजी, बाबूजी, उनकी माता जानकी, उनकी पत्नी सुलोचना एवं उनके भाई कोथांडरमन द्वारा सम्बोधित किये गये थे । अपनी वार्ता के दौरान भाई पी०आर०कृष्णा ने गुरु पदानुक्रम के बारे में गर्व और प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने भाई कमलेश को इस आध्यात्मिक खोज में हम सभी का नेतृत्व करने हेतु चयनित किया है । उन्होंने इंगित किया कि हमें स्मरण रखना चाहिये कि गुरुदेव हमारी सेवार्थ नहीं हैं वरन् गुरु परम्परा की सेवा के लिये हैं, जिन्होंने उनको चुना है और जिनको उन्होंने वचन दिया है ।

चारी जी के बारे में चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि किस प्रकार उनके पिता किसी भी कठिनाई का सामना होने के बावजूद, कोई भी काम मिशन के सेवार्थ करते हुए कभी थकते नहीं थे । 'व्हिस्पर्स फ्रॉम दी ब्राइटर वर्ल्ड' पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि चारी जी चाहते थे कि इन संदेशों को विशेष पुस्तक के रूप में संकलित किया जाये, जो कई छायाचित्रों से सुसज्जित हो और इसका एक विशिष्ट संस्करण के रूप में विमोचन किया जाये । जब पुस्तक तैयार की जा रही थी, चारी जी उल्लास पूर्वक नये संदेशों को, जो उन्होंने प्राप्त किये थे, जोड़ते जा रहे थे और जब जिल्दवाली पुस्तक की प्रारंभिक प्रति तैयार हुई तो उन्हें अत्यधिक प्रसन्नता हुई ।

इस पुस्तक के विमोचन के बाद हमारे सहजमार्ग परिवार के बच्चों द्वारा दूसरे विभिन्न प्रकाशनों का भी विमोचन किया गया ।

सायं ५:३० बजे के सत्संग के पश्चात् बहिन रंजना मेहता ने भाव विह्वल करने वाले कुछ भजन सुनाये, जिसने वातावरण को और विशेष बना दिया । फ़िर कमलेश भाई की वार्ता हुई । वे हम सभी के लिये, आलोचना नहीं करने, हमें यह स्वीकारने और महसूस करने कि हम सब एक परिवार हैं तथा मालिक के साथ स्थायी आन्तरिक जुड़ाव स्थापित करने की, महती आवश्यकता पर बोले ।

श्री राम चंद्र मिशन एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

- कमलेश भाई ने बताया कि वे इस बात से क्षुब्ध हैं कि अभ्यासियों की आलोचना करने की आदत बनी हुई है । उन्होंने कहा कि हम सब एक परिवार हैं और हमें आपस में बात करके समस्याओं के हल ढूँढ निकालने योग्य बनना चाहिये, जैसा कि हम सभी किसी भी परिवार के अन्दर करते हैं । उन्होंने प्रिय चारीजी की महासमाधि के बाद आये कई बदलावों के प्रतीसुनी गई आलोचना का ज़िक्र किया और निडरता पूर्वक कहा कि उनका प्रत्येक कदम गुरु परम्परा की इच्छानुसार है ।
- इच्छा शक्ति के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि हम सभी को बस एक गहन इच्छा की आवश्यकता है, और शक्ति वे प्रदान करेंगे । हमें केवल इस प्रबल इच्छा या इच्छा शक्ति को हासिल करने के लिये इसे स्थिर करने की जरूरत है ।
- हम सभी में गुरुदेव के समान बनने की गहरी इच्छा होनी चाहिये । केवल यह सोचना कि "आप मुझे अपने जैसा बनाइये" मूर्खता है । हमें हर कदम पर यह सोचना चाहिये कि हमें क्या बदलाव लाने की ज़रूरत है, किस कमज़ोरी को दूर करना है और इस प्रक्रिया में हमें गुरुदेव के साथ शाश्वत सम्बन्ध स्थापित करना चाहिये ।
- गुरुदेव के दर्शन हेतु लोगों में जुनून के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि बाबूजी को देखने कई लोग आते थे किन्तु वास्तव में उन्हें वे नहीं देखते थे । यह कोई देखने की चीज़ नहीं है बल्कि अपने अन्दर अनुभव करने की चीज़ है ।

१ मई २०१५

उत्सव के अन्तिम दिन की विषय वस्तु थी: 'अज्ञात रहकर पवित्र प्रेम करना' ।

अन्तिम सत्संग के पश्चात् कमलेश भाई ने भण्डारे के दौरान हमारे द्वारा प्राप्त की गयी अवस्था को

स्वयं पहचानने के बारे में वार्ता दी । वे भण्डारे के लिये स्वयं को तैयार करने के महत्व पर, अपनी इच्छाओं पर विजय पाने की आवश्यकता पर, ध्यान के लिये एक निश्चित समय निर्धारित करने पर, और अपनी इस उम्मीद कि तिरुवल्लुर में मनाये जाने वाले अगले उत्सव में वे अभ्यासियों की बड़ी संख्या को देखेंगे, के बारे में भी बोले ।

उन्होंने सभी स्वयंसेवकों, उत्सव समिति, लखनऊ के अभ्यासी, आश्रम प्रबन्धक एवं हर एक व्यक्ति जो भी इस उत्सव को सफल बनाने हेतु सामूहिक रूप से कार्य करने साथ में आये, के प्रति आभार प्रदर्शित किया । उन्होंने सप्रेम आशा व्यक्त की कि वे तिरुवल्लुर में प्रिय चारीजी के ८८ वें जन्मोत्सव में अभ्यासियों को पूरी संख्या में देख सकेंगे ।

समापन सत्संग के पश्चात् आदरणीय कमलेश भाई कॉटेज में उत्सव समिति के सदस्यों से मिले, उन्हें उनके योगदान के लिये धन्यवाद दिया और उनके साथ अल्पाहार किया । इसके बाद १० बजे प्रात: सहज मार्ग स्पिरिचुएलिटी फ़ाउण्डेशन के न्यासी मंडल की एक बैठक हुई । लगभग ११ बजे पूर्वाह्न उनकी कार्यकारिणी समिति के साथ बैठक हुई और फ़िर उनके साथ दोपहर का भोजन हुआ ।

सभी अभ्यासियों से उत्सव में अपनी उपस्थिति को अंकित करने के लिये स्वर्णिम-पुस्तक में हस्ताक्षर करने का निवेदन किया गया । युवा स्वयंसेवकों के लगभग १० दल इस कार्य को सुगम बनाने हेतु मोबाइल डैस्क के साथ आवासीय तम्बुओं के निकट गये ।

श्री राम चंद्र मिशन एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

अभ्यासियों को प्रार्थना और विचारों पर कमलेश भाई द्वारा हाल में दिये गये सुझावों को विजिटिंग कार्ड के आकार में छाप कर तथा एक और पत्रक जिसमें बाबूजी महाराज द्वारा लिखित 'व्यक्तित्व की समस्या' शीर्षक से एक लेख सम्मिलित था, वितरित किये गये ।

बाल एवं युवा केन्द्र गतिविधियाँ

विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों के लिये एक आकर्षक बाल केन्द्र बनाया गया था । यह प्रात: ६ बजे से सायं ७ बजे तक क्रियाशील था, जिससे कि अभिभावक बिना किसी बाधा के सत्संग में सम्मिलित हो सकें । लगभग २८०० बच्चे पंजीकृत किये गये थे, जिन्हें तीन समूहों में विभाजित किया गया । आयोजित गतिविधियाँ "सादगी" विषय पर आधारित थीं, और समस्त क्षेत्र को विश्व भर से आये उत्साही बच्चों द्वारा दिल के आकार के कट-आउट्स से अलंकृत किया गया था । बच्चों का मनोरंजन करने के लिये एवं उन में जीवन मूल्यों के विकास हेतु अनेक प्रकार की गतिविधियाँ आयोजित की गयी थीं । एक प्रमुख गतिविधि लकी ड्रॉ में भाग लेने का अवसर था, जिसके द्वारा उन बच्चों का चयन किया जाना था जो उत्सव में मिशन साहित्य का विमोचन करेंगे । चयनित बच्चे बहुत खुश थे क्योंकि उन्हें कमलेश भाई की उपस्थिति में बहुत से प्रकाशनों को विमोचित करने का अवसर मिला था ।

प्रत्येक दिन का प्रारम्भ छत पर बागबानी के सत्र से हुआ, जिसमें बच्चे मिट्टी तैयार करने और पौधारोपण के कार्य में व्यस्त रहे । इसके बाद बोलते-वृक्ष कार्यक्रम किया गया जहाँ बच्चों ने काफी समय पौधों के साथ संवाद करने में व्यतीत किया । सत्र के प्रारम्भ में सभी बच्चों द्वारा शिथिलीकरण तकनीक का अभ्यास किया गया । नियम ९ को याद करने हेतु भी एक सत्र आयोजित किया गया था । बच्चों को बाबूजी के जीवन से परिचित कराने हेतु, ३० अप्रैल को, बाबूजी के बचपन की प्रमुख घटनायें दर्शाते हुए एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी गयी, जिसके बाद 'लाईफ ऑफ बाबूजी' वीडियो दिखाया गया । लखनऊ शहर के बारे में भी एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी गयी थी । बच्चों के मनोरंजन के लिए २९ व ३० अप्रैल को दोपहर बाद उ०प्र० के पर्यटन मंत्रालय द्वारा जादूगरों व कठपुतलियों का खेल दिखाने वालों की सेवायें उपलब्ध करायी गयीं । कानपुर, विजयवाड़ा, लखनऊ, और चैन्नई से आये हुए बच्चों ने गायन व नृत्य का एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया ।

श्री राम चंद्र मिशन

एकोज़ इंडिया समाचार पत्र

१३ से १७ आयु वर्ग के प्रतिभागियों ने नासा–उत्तरजीवी खेल का खूब आनन्द उठाया । बच्चों के लिये 'दिव्य से जुड़े रहना', 'गुरुदेव में विश्वास' तथा 'उनके मिशन का प्रसार' विषयों पर भी सत्र आयोजित किये गये । वक्ताओं ने उनके स्वयं के अनुभव तथा इन विषयों पर गुरुदेव के अनुभवों को भी साझा किया ।

बाल एवं युवा केन्द्र के कार्यक्रमों का समापन गुरुदेव द्वारा प्रायोजित आइसक्रीम की दावत द्वारा किया गया, जिसका बच्चों ने खूब आनन्द लिया ।

नये प्रकाशनों का विमोचन

पुस्तकें

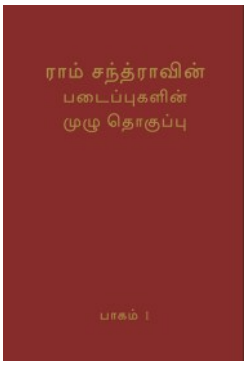

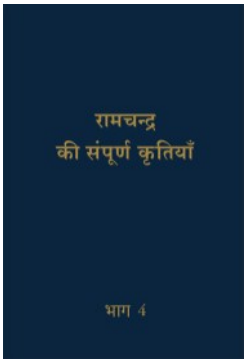

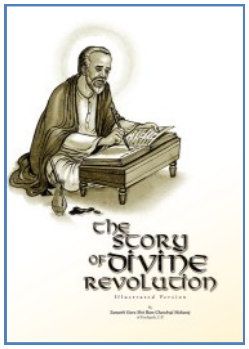

कम्प्लीट वर्क्स ऑफ़ राम चन्द्र
भाग १ (तमिल)

राम चन्द्र की सम्पूर्ण कृतियाँ
भाग ४ (हिन्दी)

दी स्टोरी ऑफ़ डिवाइन रिवौल्यूशन
(अंग्रेजी)

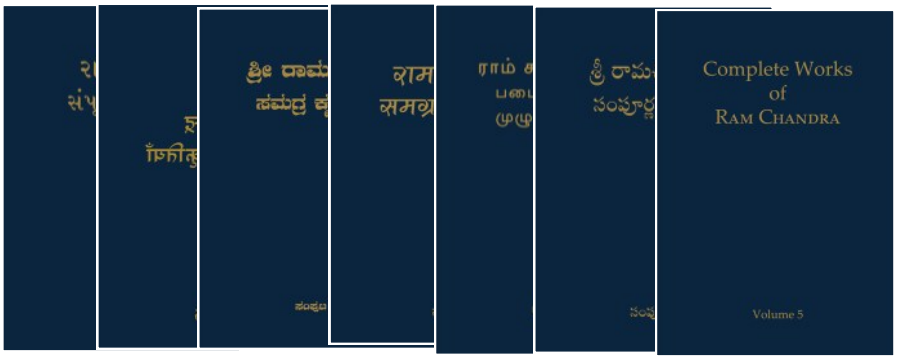

कम्प्लीट वर्क्स ऑफ़ राम चन्द्र
भाग ५
(अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, मराठी, तमिल, तेलुगु)

एम०पी०३ ऑडियो बुक

दिव्यलोक से संदेश
हिन्दी

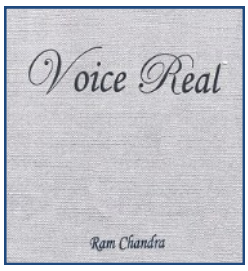

वौइस रियल
अंग्रेजी

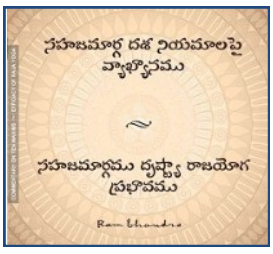

कमेंट्री ऑन टैन मैक्जिम्स एण्ड एफ़िकेसी ऑफ़ राजयोगा
तेलुगु

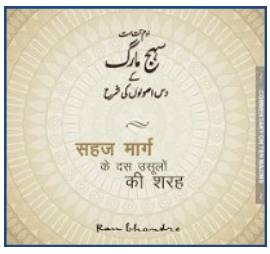

कमेंट्री ऑन टैन मैक्जिम्स एण्ड एफ़िकेसी ऑफ़ राजयोगा
उर्दू

नये प्रकाशनों का विमोचन

पिछले पृष्ठ का शेष ...

एम०पी०३ ऑडियो

रागों के रंग, मालिक के संग

हिन्दी

अंग्रेजी डी०वी०डी०

५० इयर्स ऑफ़ स्प्लैण्डर

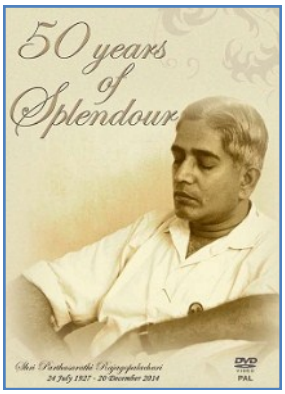

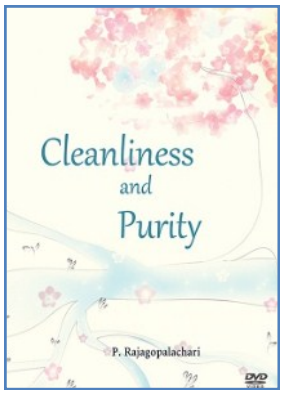

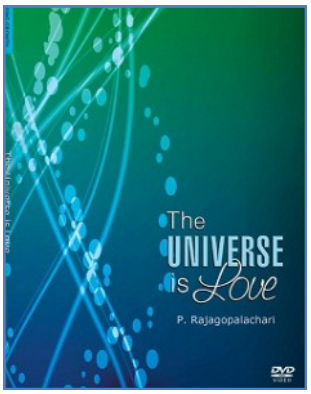

क्लीनलीनेस एण्ड प्यौरिटी

दी यूनिवर्स इज लव

एक्स्पीरियेंस एण्ड कण्डिशन

इवौल्व विद टाइम

रीड एण्ड इन्जौय

ए सीड फ़ौर द फ़्यूचर

हिन्दी डी०वी०डी०

साधना में डूबिये

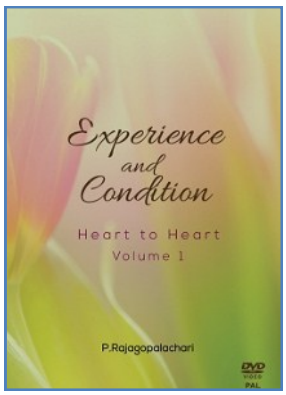

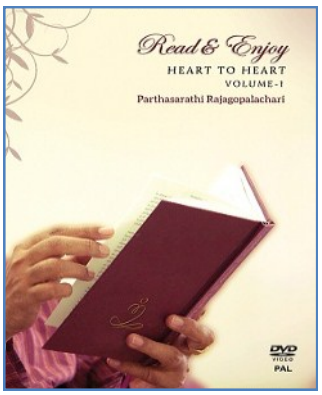

सहज मार्ग को दिल से अपनाइये

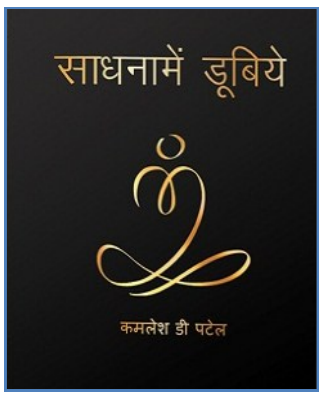

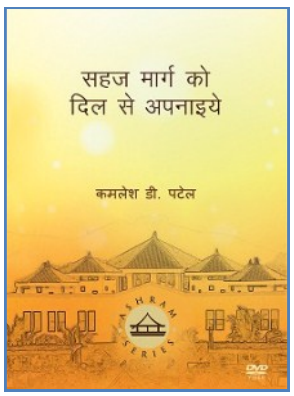

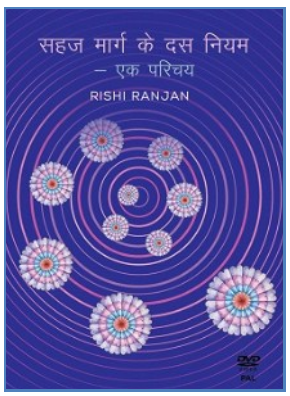

दस नियम – ऋषि रंजन

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org

© 2015 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. “Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", “SRCM”, “Constant Remembrance” and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.